सखी प्राची–

जो मुख नाए इन हूँ तौ कहौ तिन माखन खायौ,
पायन बिन गौ संग कहयौ तो वन वन ध्यायो,
ऑखिन में अंजन दियौ, गोवर्धन लियौ हाथ,
नन्द यशोदा पूत है कुंवर कान्हा ब्रजनाथ।
सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के।

उद्धवजी–

जाहे कहौ तुम कान्हा ताहे कौ पितु नहीं माता,
अखिल अण्ड–ब्रहमण्ड विश्व उनहीं में जाता,
लीला कौ अवतार लै धर आये तन श्याम,
जोत–जुगत ही पायी है पार ब्रहम पद धाम।
सुनो ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी।

सखी प्रिया–

ताहे बताओ जोग–जोग उधौ जेही पावौ,
प्रेम सहित हम पास नन्द नन्दन गुण गावौ,
नैन वैन मन प्राण में मोहन गुण भरपूर,
प्रेम पियूषे झाड़ कै कौन समैटै धूरि।
सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के।

उद्धवजी–

जो हरि के गुण होऐं वेद क्यों नेति बखानें,
निर्गुण–सर्गुण आत्मा उपनिषद जो गानें,
वेद पुरानन खोज कै नहीं पायो गुण एक,
गुण ही के जो हों ही गुण कहे आकाश कहे टेक।
सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी।

सखी प्रार्थना–

जो उनके गुण नाए और गुण भये कहॉ ते,
बीज बिना तरू जमें मोहे तुम कहौ कहॉ ते,
वा गुण की परछा हरी माया दर्पण बीज,
गुण ते गुण न्यारे नहीं अमल बाग मिल कीच।
सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के।

उद्धवजी–

जे गुण आवें दृष्टि माही नश्वर हैं सारे,
इन सब हिन ते वासुदेव अच्युत हैं न्यारे,
इन्द्री दृष्टि विकार तै रहत अधोछज ज्योति,
शुद्ध स्वरूपी ज्ञान की प्राप्ति किन को होति।
सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी।